328hi12

12

विकास के क्षेत्र

जब हम बच्चे को देखते हैं तो हमें अक्सर अपना बचपन याद आने लगता है।

क्या आप उन दिनों तथा गतिविधियों को याद कर सकते हैं जबकि आप एक बच्चे के रूप में थे?

क्या आप वह सब कुछ पुनः स्मरण कर सकते हैं, जो आपने किया था?

हम सब बहुत ज्यादा खेले और दौड़े होंगे, जबकि, अब बड़े हो जाने पर हमारी गतिविधियों में परिपक्वता आ गई है और व्यवहार भी अलग तरीके के हो गए हैं। परिवार में हम देख सकते हैं कि हमारे माता–पिता अलग तरीके का व्यवहार करते हैं क्योंकि वे हम से अधिक परिपक्व हैं। क्योंकि यह हमारे जीवन में अलग–अलग समय में होता है जिसे चरण (स्टेज) कहते हैं। मानव जीवन विभिन्न चरणों से गुज़रता है। इस पाठ में आप मानव जीवन के विभिन्न चरणों में होने वाले विकास का अध्ययन करेंगे और उसके बारे में सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप सक्षम होंगे:

- विकासात्मक कार्य क्या है का वर्णन करने में;
- मानव जीवन में विकास के चरणों की पहचान करने में;
- प्रत्येक चरण में विकास के मुख्य लक्षणों की सूची बनाने में;
- यौवनारंभ के पश्चात् बालक और बालिकाओं के बीच अन्तर की व्याख्या करने में; और
- मनःकामिक विकास संबंधी फ्रायड के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करने में।

12.1 विकासात्मक कार्य

मानव जीवन चरणों में बढ़ता है। उदाहरणार्थ, बाल्यावस्था एक चरण है। कुछ अंश तक विकास होने पर बच्चा किशोरावस्था की ओर बढ़ जाता है। प्रत्येक चरण एक प्रमुख विशेषता द्वारा चित्रित किया गया है, एक विशिष्ट लक्षण जो उस अवस्था को अद्वितीयता प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, एक बच्चे से अपेक्षा की जाती है कि वह स्कूल जाए और अध्ययन करे और एक वयस्क से अपेक्षा होती है कि वह कार्य करे और परिवार का पालन करे। इन अवस्थाओं में कतिपय विशेषताएं अन्यों की अपेक्षा अत्यधिक सुस्पष्ट होती हैं और प्रत्येक अवस्था को चरण कहा जाता है। लोग अमुक चरण पर अधिक सुगमता से और सफलतापूर्वक कुछ व्यवहार–प्रतिमान तथा कुशलताएं सीख जाते हैं और जो सामाजिक अपेक्षा बन जाते हैं। उदाहरणार्थ, एक पिता से परिवार को चलाने और बच्चे से पढ़ने और स्कूल जाने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार सभी व्यक्तियों की विशेष आयु में सामाजिक अपेक्षायें समान हो जाती हैं, जिसे ''विकासात्मक कार्य'' के रूप में जाना जाता है।

विकासात्मक कार्य विशेष आयु की सामाजिक अपेक्षायें हैं। हैविघर्ष्ट सर्वप्रथम विकासात्मक मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने विभिन्न आयु वर्गों के विकासात्मक कार्यों की पहचान की। विभिन्न चरणों मे विकासात्मक कार्य इस प्रकार हैं:

जन्म से 6 वर्ष	**6-12 वर्ष तक विकासात्मक कार्य**	**किशोरावस्था**
1. चलना–फिरना सीखना	1. साधारण खेलों के लिए शारीरिक कुशलताओं को सीखना	किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य अध्याय 15 में दिए गए हैं।
2. ठोस भोजन लेना	अपनी उम्र के दोस्तों के साथ रहना सीखना	
3. बातचीत करना	लिंग की भूमिका के बारे में सीखना	
4. मल–मूत्र त्याग करना	पढ़ने लिखने तथा गणना करने संबंधी बेसिक कुशलताओं मे विकास	
5. लिंगों के बीच अन्तर सीखना	दैनिन्दिन जीवन के लिए आवश्यक प्रत्ययों का विकास	
6. सही और गलत के बीच अन्तर सीखना	दैनिक क्रिया–कलापों में स्वतंत्रता का विकास	
	नैतिकता तथा मूल्यों का विकास	

स्वयं प्रयास करें

अपने परिवार के सदस्यों के नाम लिखें और उनमें विभिन्न चरणों (स्टेज) की पहचान करें।

12.2 विकास के चरण

आपने पढ़ा कि विकास के दौरान विभिन्न अवधियां विभिन्न चरणों द्वारा चिन्हित होती हैं। सभी बच्चों की प्रगति इन चरणों के माध्यम से निश्चित क्रम में होती है और वे सभी समान बेसिक प्रतिमानों का अनुसरण करते हैं। विकासात्मक मनोवैज्ञानिकों द्वारा बच्चे के अनुरूप उम्र के साथ इन चरणों की पहचान इस प्रकार की गई है:

चरण	**समय सीमा**
जन्म पूर्व (गर्भस्थ)	गर्भधारण सो जन्म तक
पूर्व शैशव	0-1 वर्ष
शैशवास्था	1-3 वर्ष
पूर्व बाल्यावस्था	3-6 वर्ष
बाल्यावस्था	6-12 वर्ष
किशोरावस्था	12-20 वर्ष
युवावस्था	20-30 वर्ष
प्रौढ़ावस्था	30-50 वर्ष
परिपक्व प्रौढ़	50-65 वर्ष
आयुगत प्रौढ़	65+

1. जन्म से पूर्व की अवधि (प्रीनैटल स्टेज) गर्भस्था

गर्भ धारण के समय में जीवन शुरू हो जाता है। जब तक बच्चा मां के गर्भ में होता है तो उस विशेष अवधि को जन्म से पूर्व की अवधि (गर्भस्था) के रूप में जाना जाता है। सभी महत्वपूर्ण बाहरी तथा आन्तरिक अनुभूतियां इस अवस्था में विकसित होनी शुरू हो जाती हैं।

2. शैशव (इनफैन्सी) 0 से 3 वर्ष

जन्म से लेकर तीन वर्ष तक की अवधि को शैशव (इनफैन्सी) अवधि के रूप में जाना जाता है। पहले तीन वर्षों के दौरान बच्चों का आकार बहुत तीव्र गति से विकसित होता है। गतिक निपुणताएं जैसे चीजों को पकड़ना, रेंगना, चलना शुरू करना आदि गुण इस उम्र के बच्चों में आ जाते हैं।

3. पूर्व बाल्यावस्था (3-6 वर्ष)

इस अवस्था के दौरान लम्बाई तीव्र गति से नहीं बढ़ती जैसा कि शैशवकाल में बढ़ती है। बच्चों के आंख, हाथ तथा छोटी मांसपेशियों के समन्वय में सुधार होता है। उदाहरणार्थ वे वत्त खींच सकते हैं, वे कटोरी में तरल पदार्थ डाल सकते हैं तथा बटन लगे हुए तथा बिना बटन वाले कपड़े पहन सकते हैं तथा भाषा में त्वरित विकास होता है।

4. बाल्यावस्था (6-12 वर्ष प्राथमिक स्कूल वर्ष)

6-12 वर्ष की उम्र के बीच वाले बच्चे अधिक लम्बे और पतले दिखते हैं। इस उम्र के बच्चों की मजबूती एवं चुस्ती फुर्ती में तीव्रता से विकास होता है। वे नई गतिक–कुशलता प्राप्त करते हैं तथा उनकी सक्षमता विकास के सभी क्षेत्रों में अत्यधिक सुदढ़ होती है।

5. किशोरावस्था (12-20 वर्ष)

यह बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के बीच की अवधि होती है जिससे यौवनारंभ होता है। यह वह अवधि है जिसमें तीव्र गति से मनोवैज्ञानिक विकास होता है। इस अवधि में अनेक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। इस अवधि में बच्चे रस्सी कूद सकते हैं, साइकिल चला सकते हैं, घुड़सवारी तथा नत्य कर सकते हैं और सभी संभव खेलों में भाग ले सकते हैं। संज्ञानात्मक रूप में वे अधिक सक्रिय होते हैं और सामाजिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण हो जाते हैं। परन्तु इस अवस्था की सबसे प्रमुख बात "अपनी पहचान" की खोज करना है। अनेक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन इस अवस्था में होते हैं। सेक्स रोल की अपेक्षाओं में, अच्छी लड़कियाँ अन्तवैयक्तिक संबंधों तथा परिवार को वरीयता देती हैं जबकि इस अवस्था के लड़कों का जोर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और कैरियर बनाने पर अधिक होता है।

6. प्रौढ़ावस्था (20-65+ वर्ष)

अधिक बेहतर तरीके से समझने के लिए प्रौढ़ता को तीन चरणों में बांटा जा सकता है। वे इस प्रकार हैं:

(अ) युवा प्रौढ़ता (20-50 वर्ष)

(ब) परिपक्व प्रौढ़ता (50-65 वर्ष)

(स) आयुगत प्रौढ़ता (65+ वर्ष)

बीस वर्ष के मध्य से, जिस समय शरीर के अधिकांश अंग पूर्ण रूप से विकसित हो जाते हैं, 50 वर्ष की आयु तक के जीवन में ताकत और ऊर्जा के लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसके पश्चात् धीरे–धीरे ऊर्जा के स्तर में कमी आने लगती है। इस अवस्था का वर्णन पाठ 16 में अलग से किया जाएगा।

स्वयं प्रयास करें

आपके माता–पिता तथा दूसरे भाई और बहनें घर पर रहते हैं। उनकी उम्र का पता लगाएं तथा प्रत्येक चरण के लिए ऊपर दिए गए वर्णन के अनुसार उनका वर्गीकरण करें। उनकी विशेषताओं के संबंध में सूची बनाएं। अपने माता–पिता से बात करें तथा पता करें कि संपूर्ण अवधि में उनमें कैसे बदलाव आए हैं। इस अभ्यास से आप जीवन के विभिन्न चरणों पर व्यक्तियों में विकसित होने वाली विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

पाठगत प्रश्न 12.1

उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरें:

1. मानव जीवन का आरंभ .... द्वारा होता है।
2. सामाजिक अपेक्षाओं को ....रूप में जाना जाता है।
3. बाल्यावस्था एक .... है।
4. .... दौरान विकास की दर सबसे अधिक होती है।
5. .... वर्ष की उम्र के पश्चात शक्ति क्षीण होने लगती है।

12.3 विकास के पक्ष अथवा क्षेत्र

प्रत्येक चरण पर, विभिन्न क्षेत्रों में विकास एक साथ होता है। विभिन्न चरणों के दौरान संबंधित क्षेत्रों में विकास की चर्चा निम्नलिखित पक्षों के अन्तर्गत की गई है:

शारीरिक : शारीरिक विकास शरीर के विकास से संबंधित होता है अर्थात् शरीर की लम्बाई तथा भार

गतिक : गतिक विकास मांसपेशियों के विकास और समन्वय से संबंधित होता है।

संज्ञानात्मक : संज्ञानात्मक विकास का अर्थ मस्तिष्क वद्धि तथा बौद्धिक विकास से है।

भाषा : भाषा विकास बच्चों के भाषा सीखने से सम्बन्धित है। तथा किस उम्र में वे भाषा के विभिन्न घटकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं।

व्यक्तित्व विकास : इसका अर्थ व्यक्तित्व के समग्र विकास है।

मनोसामाजिक : मनोसामाजिक विकास का तात्पर्य सांस्कतिक तथा सामाजिक प्रभावों का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ने से है।

संवेगात्मक : संवेगात्मक विकास विभिन्न संवेगों के बारे में है कि वे संपूर्ण अवधि में कैसे बढ़ते हैं।

नैतिकः इससे यह जानकारी मिलती है कि क्या सही है और क्या गलत, इस उम्र में इस ज्ञान को अर्जित करने की जरूरत होती है तथा न्याय और दण्ड के नियमों की जानकारी भी होती है। नैतिक विकास के क्षेत्र के अन्तर्गत विवेक तथा मूल्य भी आते हैं।

व्यावसायिकः यह कैरियर के चयन के बारे में होता है तथा वे जीवन में कैसे पनपते हैं तथा उन्हें कैसे प्राप्त किया जाता है।

आइए इनमें से कुछ के बारे में अध्ययन करें:

क) शारीरिक विकास

पहले तीन वर्षों में बच्चों के आकार में तीव्र गति से वद्धि होती है। यहां तक कि उनके शरीर में कई बदलाव आते हैं। अपने दूसरे वर्ष की तुलना में पहले वर्ष में बच्चे की लम्बाई दुगुनी बढ़ती है। अधिकांश बच्चे पहले वर्ष के दौरान जन्म के समय के अपने वजन से तीन गुना बढ़ जाते हैं और इसके पश्चात् दूसरे वर्ष में इसका एक चौथाई ही वजन बढ़ता है। तीसरे वर्ष के दौरान, लम्बाई और भार दोनों में कम वद्धि होती है। पहले वर्ष के दौरान एक बच्चे का मस्तिष्क का विकास प्रौढ़ावस्था के मस्तिष्क का दो–तिहाई होता है और दूसरे वर्ष की समाप्ति तक यह चार बटे पांच ही बढ़ता है।

प्री–स्कूल वर्ष (स्कूल से पूर्व की आयु): प्री–स्कूल के दौरान बच्चों की लम्बाई शिशु अवस्था की तुलना में कम गति से बढ़ती है। यह निरन्तर प्रत्येक वर्ष 2 से 3 इंच तक बढ़ता है।

मध्य/उत्तर स्कूल बाल्यावस्था: 6 से 12 वर्ष की आयु वाले बच्चे अपने प्री–स्कूल के भाइयों और बहनों से काफी अलग दिखते हैं। वे अधिक लम्बे और पतले हो जाते हैं। सामान्यतः लड़कियां, लड़कों की तुलना में मोटी लगती हैं और यह मोटापन प्रौढ़ता तक रहता है। छोटे लड़के सामान्यतः छोटी लड़कियो की अपेक्षा थोड़े वजनी (भारी) तथा लम्बे होते हैं। परन्तु लड़कियों में लड़कों से पहले यौवनारंभ हो जाता है तथा तेजी से बड़ी होने लगती हैं। किशोरावस्था का समय शैशवकाल तथा प्रौढ़ता के बीच का समय होता है। यह अवस्था बारह वर्ष से शुरू होकर बीस वर्ष के अन्त तक होती है। इसके शुरूआत का पता यौवनरंभ (रजस्वला) से लग जाता है। यह वह अवस्था है जिसमें तीव्र गति से दैहिक विकास होता है तथा उत्पादक प्रकार्य तथा प्राथमिक यौन अंग परिपक्व हो जाते हैं तथा तब द्वितीयक यौन विशेषताएं दिखाई देने लगती हैं। इस चरण पर पहुंचते–पहुंचते एक तीव्र वद्धि का अनुभव होता है।

20 से 50 वर्षों की आयु के समय में शक्ति (ताकत) और ऊर्जा अपनी चरमसीमा पर होती है और इस चरम सीमा से शक्ति और ऊर्जा में कमी इतनी धीमी होने लगती है जिसका

पता नहीं लगता है। 65 वर्ष की आयु के पश्चात वद्ध अवस्था में शारीरिक दुर्बलता तथा लचीलेपन में कमी आने लगती है।

पाठगत प्रश्न 12.2

1. रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरें:

   (अ) दूसरे वर्ष की तुलना में पहले वर्ष की दौरान बच्चों की .... लम्बाई तेज गति से बढ़ती है।

   (ब) अधिकांश बच्चे पहले वर्ष के दौरान अपने जन्म के समय के वजन से .... में अधिक वद्धि करते हैं और उसके पश्चात दूसरे वर्ष के दौरान केवल .... से कम वद्धि होती है।

   (स) लड़कों की तुलना में यौवनारंभ के दौरान लड़कियों .... अत्यधिक विकास होता है।

   (द) विकास के विभिन्न क्षेत्र .... हैं।

2. यह बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन सत्य है अथवा असत्य:

   (अ) मध्य बाल्यावस्था में बच्चों का विकास तेजी से होता है। सत्य/असत्य

   (ब) 10-20 वर्ष के दौरान सुदढ़ता और ऊर्जा चरमोत्कर्ष पर होता है। सत्य/असत्य

   (स) पहले वर्ष के दौरान प्रौढ़ की तुलना में एक बच्चे का दिमाग दो–तिहाई तक विकसित हो जाता है। सत्य/असत्य

   (द) किशोरावस्था के लगभग विकास तीव्र होता है। सत्य/असत्य

(ब) गतिक विकास

गतिक कुशलता प्राप्ति के लिए एक निश्चित क्रम होता है जो साधारण से जटिल की ओर चलता है। शरीर में आनुपातिक बदलाव से बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। जब इनमें तेजी से विकास होता है तो उनका अस्थाई रूप से अपने शरीर पर नियन्त्रण कम हो जाता है। उम्र बढ़ने के साथ–साथ उनका गतिक विकास अत्यधिक नियंत्रित दिखाई देता है। वद्धि के साथ उनके समस्त शरीर के भागों पर नियंत्रण का पता चलता है। इससे बच्चे अपने हाथों तथा अंगुलियें को अच्छी तरह से नियंत्रित कर सकते हैं अर्थात् यदि एक छोटा बच्चा बिस्कुट उठाता है तो वह अपने अनेक जोड़ो यथा कंधों तथा पूरे हाथ को चलाता है। जैसे ही वह बड़ा हो जाता है, वह केवल अपनी अंगुलियों का ही प्रयोग उन बिस्कुटों को उठाने के लिए करता है। जब वे विभिन्न तरह की गतियों पर नियंत्रण कर लेते हैं तो वे इस प्रकार चलने–फिरने लगते हैं।

ये कुशलताएं एक विशेष उम्र में हासिल होती हैं और इसे विकास के पड़ाव या मील के पत्थर के नाम से जाना जाता है।

गतिक (मोटर) विकास के कुछ पड़ाव–

सिर नियंत्रण	1 माह
बिना सहारे के बैठना	7 माह
लुढ़कना	5 माह के लगभग
चलने के पूर्व की गति	लगभग 9 से 10 माह (रेंगना)
खड़ा होना	13 से 14 महीने में अकेले खड़े होने लगते हैं।
चलना–फिरना	सहारे के साथ 9-11 महीना, अकेले चलना 15 महीने में
ऊपर चढ़ना	सहारे के साथ 18 महीने में
कूदना	20 महीने में
हेरा–फेरी	15 महीने में

प्री–स्कूल वाले बच्चेः तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे आंख, हाथ तथा छोटी मांसपेशियों में समन्वय करने लगते हैं। वे वत्त खींच सकते हैं, कटोरे में पानी डाल सकते हैं, बटन और बिना बटन वाले कपड़े पहन सकते हैं, लाइन पर कट लगा सकते हैं; डिजाइन बना सकते हैं तथा कागज को मोड़ सकते हैं। 5 वर्ष की आयु वाले बच्चे सुतली में अच्छी तरह से मोतियां डाल सकते हैं; पेन्सिल को कसकर पकड़ सकते हैं तथा उसको समुचित रूप से नियंत्रित भी कर सकते हैं; वर्गाकार आदि चित्रों की नकल कर सकते हैं।

स्कूल जाने वाले बच्चे में गतिक कुशलताएं आ जाने के कारण उनमें मजबूती, तीव्रता तथा अच्छा समन्वय दिखाई पड़ता है। वे रस्सी कूदने, साइकिल चलाने, नत्य करने तथा सभी संभव खेल खेलने में सक्षम होते हैं। इस चरण पर लड़कों तथा लड़कियों की योग्यताओं में अन्तर देखने को मिलता है। लड़कों के कार्य निष्पादन की क्षमता 5 से 17 वर्ष की आयु में सुधरती है। दूसरी ओर लड़कियों में सुधार पूर्व स्कूल अवधि में आ जाता है। लड़कियों का कार्य निष्पादन 13 वर्ष की आयु में अधिक होता है, और कुछ योग्यताएं कम होने लगती हैं अथवा स्थिर रहती हैं। क्योंकि उनमें लड़कपन चला जाता है तथा नारीत्व की लिंग–रूढ़ि प्रवत्ति आ जाती है।

युवा–प्रौढ़ावस्था (नव–वयस्कता) से मध्य की आयु में पहुंचते पहुंचते, जैविक परिवर्तन बहुत धीमे होते हैं और 50-55 वर्ष की आयु में ये परिवर्तन बहुत ही कम नजर आते हैं। इस चरण पर पहुंचते ही वे अधिक कार्य नहीं कर सकते जैसा कि वे पहले करते थे। इस आयु में संवेदनशील योग्यताओं तथा शारीरिक सुदढ़ता तथा समन्वय में भी थोड़ी कमी आने लगती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 12.3

1. विकास में पड़ाव/मील के पत्थर क्या होते हैं?
2. बताएं कि क्या नीचे दिए गए कथन सत्य हैं अथवा असत्य हैं:
   (अ) विकास में विभेदन के बाद गति का समेकन जटिल व्यवहारों में हो जाता है। सत्य/असत्य
   (ब) 4 माह की आयु वाले बच्चे स्वतंत्र रूप से बैठना आरंभ कर देते हैं। सत्य/असत्य
   (स) 2 वर्ष की आयु वाले बच्चे चलना शुरू कर देते हैं। सत्य/असत्य
   (द) 28 सप्ताह की आयु वाले बच्चे प्रहस्तन एवं पकड़ना प्रारंभ कर देते हैं। सत्य/असत्य
   (घ) गतिक कुशलताएं निश्चित क्रम में आती हैं। सत्य/असत्य

(स) संज्ञानात्मक (मानसिक) विकास

संज्ञानात्मक विकास के अन्तर्गत मनुष्य के सोचने, तर्कक्षमता एवं संप्रत्यय निर्माण का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह मन के विकास से संबंधित होता है। एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक ''पियाजे'' के मन मस्तिष्क की संरचना भी शरीर जैसी होती है। मन की मूल इकाई को 'स्किमा' कहा जाता है। एक स्किमा किसी वस्तु में मूल तत्व का अमूर्त प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए शिशु का स्किमा एक अण्डाकार फ्रेम जैसा होता है जिसमें क्षेतिज वत्ताकार वस्तु (आंखें) होती हैं। ऐसा लगता है कि स्किमा किसी विशेष वस्तु अथवा घटना की वास्तविक प्रति नहीं होती है। इस जटिल अवधारणा में मानसिक संगठन (एक बच्चे के भीतर विशेष दशाओं की अवधारणा) तथा परीक्षणात्मक व्यवहार दोनों शामिल होते हैं। स्किमा को व्यवहार द्वारा जाना जा सकता है अर्थात् चूसने की स्किमा में भूख का स्किमा समाविष्ट होता है इसलिए वह चूसता है। यहां पर भूख लगना स्किमा है तथा भोजन प्राप्त करने का प्रयास अथवा चूसने की प्रक्रिया व्यवहार है जो कि अवलोकनीय होता है।

स्किमेया (स्किमा का बहुवचन) एक बौद्धिक संरचना होती है जो घटनाओं को संगठित करती है क्योंकि ये सामान्य विशेषताओं के अनुरूप समूहों में प्राणियों द्वारा प्रत्यक्ष किए जाते हैं। उदाहरणार्थ, चेहरे के स्किमा में बच्चा कुछ सामान्य विशेषता देखता है जो कि सभी मानव चेहरों में एक विशेष तरीके से व्यवस्थित होती हैं। ये बार–बार होने वाली मनोवैज्ञानिक घटनाएं हैं जिनको बच्चा स्थैर्य ढंग से उद्दीपक रूप में वर्गीकत करता है।

ज्ञानात्मक विकास दो सामान्य सिद्धान्तों द्वारा प्रभावित होता है: व्यवस्थापन तथा अनुकूलन

संगठन में सभी प्रक्रमों का एक प्रणाली में समेकन है। आरंभ में शिशु का स्किमा देखने तथा पकड़ने में बिल्कुल भिन्न होता है जिसके परिणामस्वरूप हाथ तथा आंख में दोषपूर्ण समन्वय हो जाता है। आखिरकार बच्चा इन स्किमेयों को एक ही समय पर वस्तु को पकड़ने और देखने के लिए व्यवस्थित करता है।

अनुकूलन एक दोहरी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे अपने आस–पास के वातावरण के साथ प्रभावशाली रूप से नई संरचना का सजन करते हैं। इसमें आत्मसातकरण तथा समंजन दोनों शामिल होते हैं, जो विवेकपूर्ण व्यवहार का निचोड़ होता है।

आत्मसात्करण नई वस्तु को ग्रहण करता है, अनुभव तथा अवधारणा स्किमेय के नए रूप हैं। जब बच्चे नए उद्दीपक की प्रतिक्रिया के लिए इसका प्रयोग करते हैं वे ही आत्मसात्करण कहलाते हैं। इसमें बच्चे एक वस्तु के अर्थ को मौजूदा स्किमेय से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, 8-9 महीने का एक बच्चा जो कि एक गेंद देख रहा हो वह संभवतः अपने मुंह में उस गेंद को रखने की कोशिश करेगा। पियाजे के विचार में, बच्चा गेंद को अपने चूसने के स्किमा में आत्मसात करता है।

समायोजन की प्रक्रिया में, बच्चा अपने स्किमा को परिवर्तित करता है ताकि उसकी प्रतिक्रिया उस वस्तु को अच्छे तरीके से अनुकूल कर सके। नई वस्तु तथा परिस्थितियों के साथ ताल–मेल स्थापित करने के लिए जिस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे अपने कार्य को बदलते हैं उसे समायोजन कहा जाता है। समायोजन का उदाहरण दूसरों के अनुकूल करना है। अनुकूलन की प्रक्रिया में बच्चा अपने पास सुलभ स्किमा को छिपा लेता है तथा नए स्केमा को बनाने का प्रयत्न करता है।

आत्मसातकरण तथा समायोजन ज्ञानात्मक वद्धि तथा विकास के लिए आवश्यक होते हैं और विश्व में बच्चों की अवधारणाओं को परिवर्तित करने के लिए निरन्तर साथ–साथ कार्य करते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। आत्मसातकरण तथा समायोजन के बीच सन्तुलन बनाए रखने को ही समयावस्था कहते हैं।

पाठगत प्रश्न 12.4

उपयुक्त शब्दों के साथ रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

1. .... दोहरी प्रक्रिया है जिससे बच्चे आस–पास के वातावरण से प्रभावशाली ढंग से तालमेल बनाए रखने के लिए नई संरचनाओं का सजन करते हैं।
2. .... नई वस्तु अथवा अनुभव अथवा अवधारणा में मौजूदा स्किमेय परिवर्तित होता है।
3. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चे नए विषयों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए अपनी कार्यों को बदलते हैं उसे .... कहा जाता है।

4. आत्मसातक्रण में .... और .... दोनों शामिल होते हैं।
5. मन के मूल यूनिट अथवा संरचना को .... कहा जाता है।
6. .... में एक संपूर्ण प्रणाली में सभी प्रक्रियाओं के समन्वय शामिल रहते हैं।

मानसिक विकास के चरण

पियाजे के अनुसार, चार प्रमुख चरणों के माध्यम से संज्ञानात्मक विकास में वद्धि होती है:

(i) संवेदी गति (जन्म से 2 वर्ष): शिशुओं की प्रतिवर्त क्रिया द्वारा इसके लक्षण प्रतिबिम्बित होते हैं।

(ii) संक्रिया पूर्व (2 से 7 वर्ष)

(अ) पूर्व सम्प्रत्यय (2-4)

(ब) अन्तर्ज्ञानी (4-7)

इस अवधि के दौरान बच्चे आत्मकेन्द्रित होते हैं और उनमें वस्तु स्थायित्व की अवधारणा नहीं होती।

(iii) मूर्त संक्रिया (7 से 12 वर्ष)

इस आयु वाले बच्चे अपने आपको वातावरण से अलग करने में सक्षम होते हैं। वस्तु की उपस्थिति का ज्ञान होता है और लक्ष्य निर्देशित व्यवहार करते हैं वे चीजों और वस्तुओं को क्रम में व्यवस्थित कर सकते हैं।

(iv) औपचारिक संक्रिया (12+ वर्ष)

इस अवधि के दौरान बच्चे तर्क दे सकते हैं प्रौढ़ व्यक्ति के समान सोच–विचार करने में सक्षम होते हैं।

(द) नैतिक विकास

नैतिक विकास का संबंध नीतिशास्त्र या नीतिपरक नियमों, मूल्यों, अन्तर्विवेक तथा नैतिक कार्यों को न्यायिक ढंग से देखने की योग्यता से है। बच्चे में जब तक निर्धारित स्तर तक संज्ञानात्मक परिपक्वता नहीं आ जाती तब तक वह नैतिक निर्णय नहीं ले सकता। पियाजे के अनुसार, बच्चे नैतिक विकास के दो चरणों से होकर गुजरते हैं जिनमें एक कठोर जबकि दूसरा चरण नैतिक लचीलेपन को दर्शाता है। बच्चों की नियमों की अवधारणा, मन्तव्य, दण्ड तथा न्याय कठोर से लचीली सोच की ओर होता है। यह परिवर्तन ज्ञानात्मक विकास का प्रतीक है।

टिप्पणी

प्रथम चरण में

बच्चा, पूर्णतः सही अथवा पूर्णतः गलत के रूप में विचार करता है और सोचता है कि प्रत्येक व्यक्ति उसी तरह देखता है। वह अपने आपको दूसरों के स्थान में नहीं रख सकता। बच्चा वास्तविक भौतिक परिणामों की शर्तों के तहत निर्णय करता है और इसके पीछे उसकी कोई मंशा नहीं होती।

बच्चा नियमों का पालन करता है क्योकि वे परम पावन होते हैं तथा वे परिवर्तनीय नहीं होते।

एकतरफा सम्मान देने से यह प्रौढ़ जगत की मान्यताओं या नियमों का पालन करने में स्वयं को उपकत महसूस करता है।

बच्चे कठोर दण्ड देने के पक्ष में रहते हैं। वे महसूस करते हैं कि दण्ड ही किए गए गलत कार्यों को पारिभाषित करता है। यदि कोई क्रिया दण्ड लाती है तो वह गलत होगी।

भौतिक कानून एवं नैतिक कानून में बच्चे उलझ जाते हैं और विश्वास करते हैं कि कोई भौतिक दुर्घटना अथवा दुर्भाग्य किसी बुरे काम को परिणामस्वरूप ईश्वर अथवा किसी अन्य परमसत्ता द्वारा दिया गया दण्ड होता है।

चरण 2 में

बच्चा स्वयं को दूसरों के स्थान पर रख कर देख सकता है और दूसरों का दष्टिकोण समझ सकता है।

बच्चा किसी कार्य का निर्णय उसके पीछे छुपी मंशा से करता है उसके परिणाम से नहीं।

बच्चा समझता है कि नियम लोगों द्वारा बनाए जाते हैं और उसमें परिवर्तन किए जा सकते हैं। उनमें अधिकारी तथा समकक्ष के प्रति पारस्परिक सम्मान होता है। बच्चा कठोर दण्ड का पक्ष लेता है जो कि पीड़ित को सुधारने के लिए मार्गदर्शक होता है।

बच्चा प्राकतिक दुर्भाग्य को दण्ड नहीं मानता।

किशोर जब प्याजे की अमूर्त संक्रिया तक नहीं पहुँचते वे नैतिक विकास के उच्चतम शिखर पर नहीं पहुँच सकते। लोगों को सार्वभौम नैतिक सिद्धान्तों को समझने के लिए अमूर्त तर्क की क्षमता प्राप्त करनी होगी।

पाठगत प्रश्न 12.5

बताएं कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य

1. बच्चे नैतिक निर्णय तब तक नहीं कर सकते जब तक कि वे संज्ञानात्मक परिपक्वता के निश्चित स्तर को प्राप्त नहीं कर लेते। सत्य/असत्य

2. पहले चरण में एक बच्चा कठोरता से नैतिक अवधारणा को लेता है जबकि दूसरे चरण में नैतिक लचीलेपन द्वारा। सत्य/असत्य
3. प्रथम चरण में, बच्चा संपूर्ण सत्य और संपूर्ण असत्य के रूप में विचार करता है और सभी उसी प्रकार देखते हैं सत्य/असत्य
4. दूसरे चरण में, बच्चा अपने आपको दूसरों के स्थान पर रख सकता है और दूसरों के दष्टिकोण को देखता है। सत्य/असत्य

(ध) भाषा विकास

बच्चे बोलने से पहले भाषा को समझना सीखते हैं। जन्म के केवल कुछ मिनट पश्चात, शिशु यह निश्चय कर सकता है कि आवाजें कहां से आ रही हैं। नवजात शिशु आवाजों में बारम्बारिता, गहनता, अवधि तथा गति के आधार पर अन्तर बता सकता है।

पहले वर्ष की समाप्ति पर, शिशु आवाजों को उनकी भाषा में स्पष्ट रूप से पहचान सकता है। वे शब्दों के जोड़े के बीच अन्तर को बता सकते हैं जो कि केवल प्रारंभिक आवाज (जैसे कैट एवं बैट) में भिन्न होते हैं।

बच्चे प्रथम वास्तविक शब्द बोलने से पहले पूर्व–भाषायी चरण का अनुसरण करते हैं जिसमें क्रमिक रूप से अभेदित रुदन, विभेदित रुदन, कूकना, बलबलाना या अपूर्ण नकल या दूसरों की ध्वनि की नकल करना, भाषा जाल की अभिव्यक्ति आते हैं।

हालांकि, वास्तविक संप्रेषण में, बोलने के गुण तथा दूसरे लोग क्या बोलते हैं को समझने की योग्यता शामिल होती है। इस प्रकार विकास कार्य के चार प्रमुख अनुक्रम हैं– बोधगम्यता, स्पष्ट उच्चारण, सुस्पष्ट शब्दावली और सार्थक वाक्य। जब शिशु पूर्ण रूप से सार्थक शब्द बोलता है तो वे पुनः उत्कष्ट चरणों से होकर जाते हैं जो कि इस प्रकार हैः

1. एक शब्दीय वाक्य : एक वर्ष की आयु में बच्चा ''बाहर'' कहने लगता है। परिस्थितियों पर निर्भर करता है कि वह क्या अर्थ लगाए ''मैं बाहर जाना चाहता हूँ'' अथवा ''मम्मी बाहर गई है''।
2. बहुशब्दीय वाक्य : लगभग दो वर्ष की आयु में वह दो अथवा उससे अधिक शब्दों के वाक्य बनाने का प्रयास करता है अर्थात् ''मैं जाऊँ''। इनमें शब्द केवल संज्ञा और क्रिया होते हैं। इस टेलीग्राफिक बोल में केवल वही शब्द होते हैं जो कि अर्थपूर्ण हों।
3. व्याकरणीय रूप से सही क्रियामूलक बोलियाँ : तीन वर्ष की आयु वाले बच्चे स्पष्ट रूप से भाषा की अभिव्यक्ति करते हैं। वे लगभग 900 शब्दों को याद रख सकते हैं, वे बड़े वाक्यों को बोल सकते हैं जिसमें वाक्य के सभी अवयव शामिल रहते हैं और उन्हें व्याकरणीय सिद्धान्तों के बारे में अच्छी जानकारी होती है। सिद्धान्तों के अपवादस्वरूप वे छोटी–छोटी घोषणाएं कर सकते हैं अर्थात हम स्टोर जा रहे हैं।

3 से 4. वर्ष की आयु के बीच वाले बच्चे 3-4 ''टेलीग्राफिक'' वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं जिसमें केवल अति आवश्यक शब्द शामिल रहते हैं। वे अनेक प्रश्नों को पूछ सकते हैं तथा साधारण आदेश दे सकते हैं और उसका अनुसरण भी कर सकते हैं। उन्हें लगभग 900-1200 शब्द याद रहते हैं। 4 तथा 5 वर्ष की आयु के बीच वाले बच्चे चार से पांच शब्दों के वाक्य बोल सकते हैं वे प्रीपोजीशन जैसे ओवर, अन्डर, इन, ऑन, तथा बिहाइन्ड का प्रयोग कर सकते हैं। वे संज्ञा की तुलना में क्रियाओं का प्रयोग अधिक करते हैं तथा उन्हें 1500 से 2000 शब्दों की शब्दावली स्मरण रह सकती है।

5 तथा 6 वर्ष की आयु के बीच वाले बच्चे छः से आठ शब्दों के वाक्यों को पारिभाषित करना शुरू कर देते हैं। और उन्हें कुछ विलोम शब्दों का भी ज्ञान होता है। वे प्रत्येक दिन अपनी अभिव्यक्तियों में अधिक से अधिक संयुक्ताक्षर, प्रीपोजीशन तथा आर्टिकल का प्रयोग करते हैं। व्याकरणीय दृष्टि से बोली सुस्पष्ट होती है हालांकि उनमें नियमों का उतनी अच्छी तरह से ध्यान नहीं रखते। भाषा आत्मकेन्द्रित न होकर ज्यादातर सामाजिक होती है और उन्हें लगभग 2000-2500 शब्दों की शब्दावली का स्मरण रहता है।

6 तथा 7 वर्ष की बीच की आयु वाले बच्चे की बोली थोड़ी परिष्कत हो जाती है। वे इस अवस्था में मिश्रित, जटिल तथा व्याकरणीय दृष्टि से सही वाक्यों को बोलते हैं। वे वाक्य के सभी भागों का प्रयोग करते हैं और उन्हें 3000-4000 शब्दों की शब्दावली का ज्ञान होता है। पियाजे के अनुसार पूर्व–स्कूल के बच्चों की बोली या तो आत्मकेन्द्रित होती है अथवा समाजीकत होती है। आत्मकेन्द्रित बोली में शब्दों और पाठ्यक्रमों का दुहराव होता है जोकि मोनालॉग (एक व्यक्ति से बात करने) तथा कलेक्टिव मोनोलॉग (दो या दो से अधिक) व्यक्तियों के आपसी वार्ता के लिए होता है। समाजीकत बोली स्पीच में दो तरफ से संप्रेषण होते हैं।

छः वर्ष की आयु के बच्चे मिश्रित व्याकरण का प्रयोग करने लगते हैं तथा उन्हें 2500 शब्दों की शब्दावाली का ज्ञान हो जाता है परन्तु वे सूक्ष्म विश्लेषण करने में निपुण नहीं होते। 4 वर्ष की आयु से बच्चे लम्बे वाक्यों को बोलने लगते हैं और अधिक जटिल व्याकरण का प्रयोग करते हैं। स्कूल के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, वे यदा–कदा पैसिव वाक्यों अथवा क्रियाओं का प्रयोग करते हैं जिनमें हैव अथवा कंडीशनल वाक्य (यदि आप ऐसा करते, तो मैं यह कार्य कर देता) शामिल होते हैं। उनकी सिनटैक्स को स्पष्ट रूप से समझने की शक्ति तेज गति से बढ़ती है और यह संभवत: 9 वर्ष की आयु के पश्चात होता है। इस स्तर पर आत्मकेन्द्रीकरण की प्रवत्ति कम हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 12.6

बताएं कि निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्य:

1. जन्म के पश्चात् शिशु को यह पता नहीं चलता कि आवाज कहां से आ रही है। सत्य/असत्य

2. विशिष्ट चरण पर बच्चे सुस्पष्ट सार्थक बोली बोल सकते हैं। सत्य/असत्य
3. 3 वर्ष की आयु के बच्चे वाक्य बोल सकते हैं। सत्य/असत्य
4. तीन से चार वर्ष के बीच की आयु वाले बच्चे तीन से चार शब्द वाले ''टेलीग्राफिक'' वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं। सत्य/असत्य

(न) व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व विकास का संबंध व्यक्ति के शारीरिक बनावट, स्वभाव, गुण, योग्यताओं, आकांक्षाओं, रुचि आदि से है, जोकि उसका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा उसे एक स्पष्ट पहचान दिलाते हैं।

व्यक्तित्व के संबंध में सबसे पुराना तथा अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन फ्रॉयड द्वारा किया गया। उसके अनुसार, व्यक्तित्व की संरचना के तीन भाग अर्थात् इड, इगो तथा सुपरइगो होते हैं। इगो तभी पनपता है जब तुष्टिकरण में देरी होती है; यह वास्तविकता के सिद्धान्त पर चलता है और यह तुष्टिकरण प्राप्त करने का सही और स्वीकार्य माध्यम है। सुपरइगो अथवा विवेक समाज के नैतिक कार्यों में शामिल होता है।

जन्म के समय पर ही इड होता है। शिशु आत्मकेन्द्रित होते हैं। यह तभी होता है जब तुष्टिकरण में विलम्ब होता है और वे खाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं जिससे उनके इगो का विकास होता है और वे अपने आपको आस–पास के वातावरण से अलग समझना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार इगो जन्म के तुरन्त पश्चात विकसित हो जाता है। सुपरइगो तब तक विकसित नहीं होता जब तक कि बच्चे की आयु 4 अथवा 5 वर्ष की न हो जाए। फ्रायड के विचार में व्यक्तित्व का विकास एक संगठन तथा मूल काम शक्ति की अभिव्यक्ति अथवा कामवासना के रूप में होता है। फ्रायड के विचार में, मानव जीव मनोकामिक विकास (ओरल, एनल, फालिक, लेटेंसी, जेनीटल) के विभिन्न चरणों से गुजरता है। फ्रायड की मान्यता थी कि शैशव तथा बाल्यकाल की घटनाएं प्रौढ़ व्यक्तित्व के निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। उन्होंने देखा कि पहले तीन चरण प्रौढ़ लोगों के व्यवहार के साथ तालमेल रखने के लिए विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन चरणों के दौरान हुए अनुभव प्रौढ़ लोगों के व्यक्तित्व के गुणों तथा समायोजन के तरीकों को निर्धारित करते हैं। यदि उसकी आवश्यकताएं पूरी नहीं होती अथवा उनमें केन्द्रिकता पैदा हो जाती हैं तो व्यक्ति का व्यक्तित्व एक विशेष स्तर पर स्थिर होकर रह जाता है। स्थिरता का अर्थ मनोरोग की तरह का अपरिपक्व लगाव होता है, जो सामान्य विकास में रुकावट डालता है।

मुखीय अवस्था (जन्म से 12-18 महीने) में बच्चे किसी भी चीज को मुह में डालकर चूसते हैं और उससे अपना तुष्टिकरण करते हैं। इस अवस्था के दौरान, शिशुओं का संबंध केवल अपना तुष्टिकरण करने से है। वे पूरा इड होते हैं क्योंकि वे सुख के सिद्धान्त पर

कार्य करते हैं। यदि एक बच्चा इस अवस्था पर सन्तुष्ट महसूस नहीं करता तो वह स्थिर हो जाता है। ऐसे मामले में प्रौढ़ व्यक्तित्व मुख–चुम्बन, धूम्रपान, नाखून काटने, अधिक भोजन अथवा अधिक मदिरापान अथवा प्रिय वस्तु की दबावपूर्ण मांग अथवा बच्चों जैसी अधिक निर्भरता से अमानुपातिक सन्तुष्टि पाते हैं।

गुद काल (एनल स्टेज) (12-18 महीने से 3 वर्ष): इस अवस्था पर बच्चे सर्वाधिक सुख अपनी उत्सर्जन प्रक्रिया से लेते हैं या जैसे उनकी उत्सर्जन प्रक्रिया का प्रशिक्षण किया जाए। यदि स्वच्छता पर अधिक ध्यान दिया जाए तो व्यक्ति नित्य कर्मों के लिए मनोग्रस्तिज रूप से स्वच्छ अथवा अवज्ञा करके गंन्दा, दंभी, मनोग्रस्तिज रूप से निश्चित तथा जड़तापूर्वक बंध हो सकता है। गुदकाल में होने वाली समस्यायें व्यक्ति को अपनी चीजों को समेटकर रखने वाला बना सकती हैं अथवा उसे वस्तुओं को दान करने में साथ प्यार की पहचान मिलती है।

लिंगीय अवस्था (फालिक स्टेज) (पूर्व जनांगीय अवस्था): फ्रायड के अनुसार, मनोकामिक सुख का प्राथमिक क्षेत्र जोर 3 से 4 वर्ष की आयु पर परिवर्तित होता है, जब सुख और रुचि जनांगीय क्षेत्र में केन्द्रित हो जाते हैं। प्रीस्कूल्स लड़कियों तथा लड़कों और प्रौढ़ तथा बच्चों के बीच शारीरिक भिन्नताओं द्वारा सम्मोहित हो जाते हैं। ओडीपस ग्रन्थि (कॉम्प्लेक्स) के सिद्धान्त के अनुसार, 3-6 वर्ष का लड़का अपनी मां को अधिक प्यार करता है और इस प्रकार मां के प्यार तथा स्नेह के लिए अपने पिता के साथ द्वन्दी बनता है। नासमझी में छोटा बच्चा अपने पिता की जगह लेना चाहता है लेकिन वह पिता की शक्ति को पहचानता है। बच्चा अपने पिता के प्रति निष्कपट प्रेम, विरोधी भावना तथा विद्वेष, प्रतिद्वन्दिता तथा डर के कारण द्वन्दात्मक भावना से ग्रसित हो जाता है। यह ध्यान देते हुए कि छोटी लड़कियां भिन्न होती हैं, उनहें क्या हुआ वह आश्चर्य चकित होता है। तथा अपनी माता के प्रति भावनाओं पर अपराधबोध उसे चिन्तित करता है कि उसका पिता उसे भी लड़की बना देगा। डरते हुए वह अपनी मां के प्रति अपनी लैंगिक इच्छाओं को दबाता है, पिता के प्रति प्रतिद्वन्दिता को रोकने की कोशिश करता है तथा उनके साथ ही अपनी पहचान खोजता है।

फ्रायड के मनोलैंगिक विकास के सिद्धान्त से सहमत होते हुए भी कारेन होर्ने (1924) इस विचार को खारिज करती हैं कि किशोर युवतियां, लैंगिक अवस्था के दौरान शिशन ईर्ष्या का अनुभव करती हैं। इसके विपरीत वह गर्भस्थ ईर्ष्या की संकल्पना का आभास प्रकट करती हैं कि लड़के नारी की शारीरिक संरचना के उन भागों से घृणा कर सकते हैं जो कि उसके पास नहीं हैं। वह विचार देती हैं कि किशोरियां संरचनात्मक शिशन की इच्छा नहीं करती बल्कि सामाजिक शिशन एक शक्ति तथा पहचान जो लैंगिक प्रतीति उसके नरप्रतिरूप को सुनिश्चित करती है।

इलैक्ट्रा मनोग्रन्थि इडिपस मनोग्रन्थि के समान है। एक छोटी बच्ची अपने पिता को चाहती है लेकिन अपनी माता से डरती है। इन भावनाओं को दमित करती है और अन्ततः स्वलिंगी माता–पिता के साथ पहचान बनाती है।

परम अहं (सुपर इगो) का विकास

स्वलिंगी माता–पिता के साथ पहचान बनाते हुए बच्चे वस्तुतः माता–पिता के व्यक्तित्व को अपने में अन्तःक्षेपित करते हैं। मनोविश्लेषक के विचार में यह अन्तःक्षेपण कहलाता है। वे अपनी इच्छाओं, महत्व तथा मानदण्डों का अन्तःक्षेपित करते हैं। यह परम अहं अन्तर्विवेक के समान होता है। इस अवस्था में एक बच्चे का अन्तर्विवेक अडिग होता है।

मध्य बाल्यावस्था तक, नवयुवक अपने ओडिपल द्वन्दों का समाधान करके, अपनी सैक्स भूमिका को स्वीकार करते हैं और अपनी ऊर्जा को तथ्य, कौशल तथा सांस्कतिक अभिवत्तियों को अर्जित करने में लगाते हैं।

स्कूल जाने वाले बच्चे में अहं अथवा आत्म–संप्रत्यय का विकास सभी क्षेत्रों से धमकी प्राप्त करता है। सुदढ़ता को बनाए रखने के लिए बच्चे प्रतिरक्षात्मक युक्तियों का विकास कर सकते हैं जिनमें से अनेक पूरे जीवन में बनी रहती हैं। आप इनमें से कुछ के बारे में पाठ 17 में पढ़ सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 12.7

रिक्त स्थानों की पूर्ति करोः

1. .... वास्तविकता के सिद्धान्त पर कार्य करता है तथा तुष्टिकरण प्राप्त करने के लिए स्वीकार्य तरीके का प्रयोग करता है।
2. .... अथवा अन्तर्विवेक समाज की नैतिकता को शामिल करता है, विशेषकर समान लिंगी के माता–पिता के साथ पहचान द्वारा।
3. .... अवस्था में उनका तुष्टिकरण .... मुंह में जा सकने वाली किसी भी चीज को चूसने से होता है।
4. .... अवस्था में उनके उत्सर्जन क्रिया से अत्याधिक सुखद अनुभव होता है।
5. आडीपस ग्रन्थि में बच्चे .... लिंग के प्रति प्यार दर्शाते हैं।

बताएं कि नीचे दिये गये कथन सत्य हैं अथवा असत्यः

1. इद (इड) जन्म के समय पर होता है। सत्य/असत्य
2. जन्म के तुरन्त बाद अहं (इगो) विकसित होता है। सत्य/असत्य
3. 14 अथवा 15 वर्ष की आयु से पहले अहं (इगो) विकसित नहीं होता। सत्य/असत्य
4. व्यक्तित्व विकास प्राथमिक काम ऊर्जा अथवा कामवासना का संघटक तथा अभिव्यक्ति होता है। सत्य/असत्य

5. फ्रायड के अनुसार, शिशु तथा पूर्वबाल्यावस्था की घटनाएं प्रौढ़ व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं करती हैं। सत्य/असत्य

प) मनोसामाजिक विकास

मनोसामाजिक विकास सामाजिक संसार के लिए बच्चों की अनुक्रिया को प्रतिबिम्बित करता है। इसमें स्वबोध, दूसरों तथा अन्यों के साथ संबन्ध शामिल होता है। 2-6 वर्ष की आयु से बच्चा यह सीखता है कि कैसे सामाजिक संपर्क स्थापित किया जाए तथा वह लोगों के साथ घर से बाहर जाने लगता है। वह स्वयं को दूसरों के अनुकूल करना सीखता है तथा सामूहिक खेल में सहयोग करता है।

भ) संवेगात्मक विकास

जीवन में व्यक्तिगत समायोजन करने में सभी संवेग महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। नवजात शिशु में संवेगात्मक प्रतिक्रिया की योग्यता मौजूद होती है। अत्यधिक उत्तेजना के कारण संवेगात्मक व्यवहार का पहला चिन्ह सामान्य उत्तेजना होता है। वर्ष 1919 में मनोवैज्ञानिक ने दावा किया कि शिशुओं में जन्म के समय प्रमुख रूप से तीन संवेग निहित होते हैं– प्यार, क्रोध और भय जो कि उद्दीपकों के प्रति स्वाभाविक अनुक्रियाएं हैं। एक दशक के पश्चात यह सुझाव दिया गया कि शिशुओं में संवेगात्मक प्रवत्ति सामान्य होती है और न कि विशेष प्रकार की जैसा कि मनोवैज्ञानिकों का विश्वास था। अब इस पर विश्वास किया जाता है कि नवजात शिशु में केवल एक संवेग दिखाई देता है जो कि अस्पष्ट उत्तेजना है। नवजात शिशु की सामान्य उत्तेजना में विभेद साधारण प्रतिक्रिया में हो जाता है जो कि सुख और दुःख है। यहां तक कि एक वर्ष की आयु में, संवेगों की संख्या बढ़ जाती है और बच्चों मे आनन्द, क्रोध, डर, ईर्ष्या, प्रसन्नता, चिन्ता, उत्सुकता तथा जलन आदि भावनाएं प्रतिबिम्बित होती हैं। जन्म के समय संवेग रहते हैं और इनका विकास बच्चे की परिपक्वता तथा सीखने के कारण होता है।

बच्चों के संवेग वयस्कता के साथ सामान्य से विशिष्ट की ओर विकसित होते हैं। जीवन के प्रथम सप्ताह से वे, भूख, सर्दी, दर्द, कपड़े न पहने होने तथा सोने में व्यवधान होने, उनको भोजन मिलने में व्यवधान होने तथा अकेले पड़े रहने के कारण रोते हैं। बच्चे की मुस्कान का अर्थ प्राथमिक सम्प्रेषण है जो संवेग का एक सुन्दर चक्र बना देता है। लगभग चार महीने का बच्चा जोर–जोर से हंसना शुरू कर देता है। वे सभी प्रकार की चीजों पर उत्तेजित तरीके से जोर से हंसते हैं। संवेगात्मक क्षेत्र में, किशोर अपने संवेगों को अमूर्त विचारों की ओर निर्देशित करने में सक्षम होते न केवल लोगों की ओर। बहुत से किशोर प्रत्येक व्यक्ति की निरन्तर संवीक्षा से अनुभव करते हैं और सोचते हैं कि दूसरे लोग उनके वैसे ही प्रशंसक या आलोचक हैं जैसे अपने प्रति वे स्वयं। वे निरन्तर काल्पनिक श्रोताओं के प्रति रचना या प्रतिक्रिया करते रहते हैं। वे घंटों शीशे के सामने खड़े होकर कल्पना करते रहते हैं कि वे दूसरों की आंखों में कैसे लग रहे होंगे।

पाठगत प्रश्न 12.8

बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्यः

1. नवजात शिशु में केवल एक संवेग दिखाई देता है – सामान्य उत्तेजना। सत्य/असत्य
2. बच्चों के संवेग अलग होते हैं क्योंकि वे प्रौढ़ता की ओर सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ते हैं। सत्य/असत्य
3. संवेगात्मक क्षेत्र में, किशोरावस्था के बच्चे अपने संवेगों को अमूर्त विचारों पर प्रतिबिम्बित करने में सक्षम होते हैं और न कि केवल लोगों के प्रति। सत्य/असत्य
4. जन्म के समय ही संवेग विद्यमान रहते हैं और इनका विकास परिपक्वता तथा सीखने के कारण होता है। सत्य/असत्य

आपने क्या सीखा

- जीवन के विभिन्न चरणों में विकास होता हैः

(i) गर्भस्थ (प्री नैटल) –	जन्म से पहले	
(ii) शैशव (इनफैन्सी) –	0-3 वर्ष	
(iii) प्री–स्कूल –	3-6 वर्ष	
(iv) स्कूली बच्चे –	6-12 वर्ष	
(v) किशोर अवस्था –	12-20 वर्ष	
(vi) प्रौढ़ता –	युवा	20-50 वर्ष
	प्रौढ़	50-65 वर्ष
	आयुगत प्रौढ़	65+ वर्ष

- एक विशेष उम्र की सामाजिक जरूरतों को विकास कार्य के रूप में जाना जाता है।
- मील का पत्थर (माइल्सटोन) वह उम्र है जिसमें विशेष कुशलताओं की आवश्यकता होती है।
- विभिन्न क्षेत्रों में विकास होता है प्रत्येक के लक्षण पेज 45-46 पर दिए गए हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. विकास के विभिन्न स्तरों तथा इनसे संबंधित आयु समूहों की चर्चा करें।
2. विकासात्मक कार्य क्या हैं?
3. विकास के मुख्य क्षेत्र कौन से हैं?
4. शिशुओं तथा प्री स्कूल बच्चों के दष्टिकोण में अन्तर का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित शॉर्ट नोट बनाइए:

   (क) संज्ञानात्मक विकास

   (ख) नैतिक विकास

   (ग) व्यक्तित्व विकास

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. चरण   2. विकासात्मक कार्य   3. चरण   4. प्रथम तीन वर्ष   5. 50

12.2

1. क) दो बार ख) तीन; एक–चौथई   ग) चर्बी उत्तक

   घ) शारीरिक, गतिक, मानसिक, भाषा, व्यक्तित्व, मनोसामाजिक, संवेगात्मक नैतिक, व्यावसायिक

2. क) गलत   ख) गलत   ग) सही घ) सही

3. क) सही   ख) सही   ग) गलत   घ) सही

12.3

1. मील के पत्थर आयु हैं जिस पर विशिष्ट कौशलों को विकसित किया जाता है।

2. क) सही   ख) गलत   ग) गलत   घ) गलत   ङ) सही

12.4

1. क) अनुकूलन   ख) समंजन   ग) समानुकूलन

   घ) समंजन; समानुकूलन   ङ) स्किमा   च) स्किमेय

12.5

1) सही 2) सही 3) सही 4) सही

12.6

1) गलत 2) सही 3) सही 4) गलत

12.7

1. क) अहं ख) परम अहं ग) मुखीय घ) पार्यवाय

2. क) सही ख) सही ग) सही घ) सही ङ) गलत

12.8

1. सही 2. सही 3. सही 4. सही

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. खण्ड 12.2 का संदर्भ ले
2. खण्ड 12.1 का संदर्भ ले
3. खण्ड 12.3 का संदर्भ ले
4. खण्ड 12.3 (क) का संदर्भ ले
5. क) खण्ड 12.3 (ग) का संदर्भ ले
6. ख) खण्ड 12.3 (घ) का संदर्भ लें
6. ग) खण्ड 12.3 (च) का संदर्भ ले